प्र०- संरचनात्मक - प्रकार्यात्मक उपागम की विवेचना करें। (Structural functional approach

उ० → संरचनात्मक - प्रकार्यात्मक उपागम व्यवस्था विश्लेषण की तरह राजनीतिशास्त्र में बहुत लोकप्रिय उपागम है। तुलनात्मक राजनीति में व्यवस्था विश्लेषण उपागम के बाद संरचनात्मक उपागम की लोकप्रियता और महत्व बढ़ी। ईस्टन ने व्यवस्था उपागम को 'निवेश निर्गत मॉडल' (Input - Output model) की संज्ञा दी जबकि आमण्ड - पॉवेल ने अपने मॉडल को 'संरचनात्मक-प्रकार्यात्मक व्यवस्था' की संज्ञा दी।

कुछ विद्वान कहते हैं कि दोनों उपागमों का स्वरूप एक ही है, नाम केवल अलग-अलग है जबकि कतिपय विद्वान का कहना है कि डेविड ईस्टन के व्यवस्था उपागम के असंतोष के कारण संरचनात्मक उपागम का जन्म हुआ। वैसे तुलनात्मक राजनीति में सभी राजनीतिक व्यवस्थायें की कुछ संरचनायें होती है और सभी संरचना की कार्यशैली और दायित्व अलग-अलग होता है।

संरचनात्मक प्रकार्यात्मक उपागम में दो शब्द है - संरचना एवं प्रकार्य। प्रकार्य के अनेक अर्थ लगाये जाते हैं। यंग ने कहा है कि "प्रकार्य अन्तर्गतता वस्तुनिष्ठ परिणामों से सम्बद्ध है।" मर्टन ने कहा है कि "प्रकार्य पर्यवेक्षित परिणाम है जो किसी व्यवस्था के अनुकूलन या पुनः समायोजन बनाए रखते हैं।" दूसरा

शब्द है 'संरचना'। तुलनात्मक राजनीति व्यवस्था के अंतर्गत प्रकार्यों के दायित्वों का निष्पादन करने वाला व्यवस्थापक संगठन को संरचना कहा जाता है।

आमण्ड एवं पावेल ने सर्वप्रथम 1960 में राजनीतिशास्त्र में उपागम शब्द का प्रयोग किया था और उसने कहा कि जब किसी संरचना में निरंतर होनेवाले व्यवहारों के कारण उस संरचना के अस्तित्व को स्थिर रहने का सहारा मिलता है तो उन क्रियाओं को प्रकार्यात्मक कहा जाता है। रिग्स ने कहा है कि "यदि प्रकार्यों के विरुद्ध संरचनाओं पर जोर नहीं दिया जाता है तो विश्लेषण गुमराह करनेवाला होता सकता है।" इस प्रकार सामान्य अर्थ में प्रकार्यात्मकवाद की मूल मान्यता है कि समाज तथा राजनीति-पद्धति को कायम रहने के लिए कुछ आवश्यक कार्यों का सम्पादन होना चाहिए। जैसे, व्यक्ति के लिए आवास, भोजन, सुरक्षा तथा सांस्कृतिक उत्थान के लिए आदि की पूर्ति करना होगा। वर्तमान राजनीतिक पद्धति तथा समाज के लिए, तथा उनके अस्तित्व को बनाये रखने के लिए जिन कार्यों के सम्पादन की आवश्यकता पड़ती है, उसे कार्यात्मक आवश्यकताएं कहते हैं।

राजनीतिक व्यवस्था में प्रकार्यों के निष्पादन की जो प्रणाली या व्यवस्था है उसे संरचना कहते हैं। विधायिका केवल निर्वाचित या मनोनित सदस्यों की सामूहिकता को न कहकर, केवल उसी अवस्था में व्यवस्था संरचना कही जाएगी, जब वह व्यवस्था को बनाये रखने की क्रिया को नियमित रूप से निष्पादित करती हो।

विशेषताएं — इस उपागम की निम्नलिखीत विशेषताएं हैं: →

① संरचनात्मक उपागम का स्वरूप व्यवस्था विश्लेषण के स्वरूप पर आधारित है।

Scanned with CamScanner

(2) इस उपागम की व्यवस्था में विविध संरचनाओं में प्रकार्यात्मक निर्भरता होती है।

(3) संरचनात्मक - प्रकार्यात्मक उपागम में अंतःनिर्भरता पायी जाती है।

(4) इस आगम में राजनीतिक व्यवस्था खुली व्यवस्था में रहती है।

(5) इसका क्षेत्र सम्पूर्णता एवं व्यापकता है।

(6) इस उपागम में अंतःनिर्भरता, विशेषीकरण, चेतना केन्द्र एवं कार्यक्षमता देखने को मिलती है।

(7) यह उपागम सामाजिक परिवर्तन की अवधारणा को एक प्रकार की स्थिर अवस्था की ओर ले जाती है।

(8) यह उपागम समाज में बहुत ही व्यापक और तीव्र प्रक्रिया की संभावना प्रस्तुत करता है।

इस प्रकार हम कह सकते हैं कि यह उपागम तुलनात्मक राजनीति को एक नई दिशा प्रदान करता है तथा परम्परागत जड़ता को तोड़ता है। इसका दृष्टिकोण समग्रवादी है तथा यह राजनीति के सभी पहलुओं का अध्ययन करता है। यह आगम राजनीतिक व्यवस्थाओं के कार्य संचालन को सुव्यवस्थित करता है। इससे सही निष्कर्ष निकालने और राजनीतिक व्यवस्थाओं की सत्यात्मक शक्तियों को समझने में सहायता मिलती है।

Scanned with CamScanner